7. अनुसन्धान को आम जनता तक पहुंचाने हेतु वानिकी विस्तार

परिषद् द्वारा सरलतापूर्वक क्रियान्वित की जा सकने वाली प्रौद्योगिकी का हस्तान्तरण लक्षित वर्ग, खासकर, किसानों को किया जाता है। परिषद् द्वारा वन विस्तार कार्यक्रमों का प्रसार भी किया जाता है और भा.वा.अ.शि.प. तथा संस्थानों के विभिन्न क्रियाकलापों में संयोजन किया जाता है। परिषद् द्वारा वानिकी, पर्यावरण तथा सम्बद्ध विषयों और समाघात आकलन आदि पर परामर्शी/तकनीकी सेवायें मुहैया कराई जाती हैं। स्कीम, प्रदर्शन ग्राम, वी.वी.के. के साथ के.वी.के नेटवर्क, डायरेकट टू कन्ज्यूमर योजना, विभिन्न विस्तार क्रियाकलापों के आयोजन तथा स्तरीय प्रकाशन के जरिये अनुसन्धान परिणामें को हितधारकों तक पहुंचाना है।

7.1. वानिकी रिपोर्ट/जार्नल्स का संग्रह, संकलन एवं प्रकाशन

7.1.1. अनुसन्धान प्रकाशन : भा.वा.अ.शि.प. मुख्यालय द्वारा प्रकाशित पुस्तकें और न्यूजजैटर्स, इस प्रकार हैं :

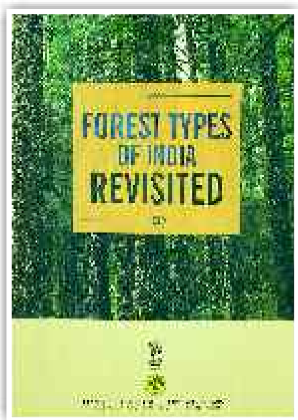

- भा.वा.अ.शि.प. की वार्षिक रिपोर्ट 2012–13
- द्वि–वार्षिक – भा.वा.अ.शि.प. न्यूजलैटर तथा "वानिकी समाचार"
- पुस्तक–फारेस्ट टाइप्स ऑफ इंडिया–रिविजेटेड
- 'इनोवेशस फार फोटेस्ट कार्बन फाइनेंस इन इण्डियां' कार्यशाला की प्रोसीडिगम
- भारत के वनों में "सॉयल आर्गेनिक कार्बन स्टॉक" पर एक पुस्तक
- आईसी एस आर. ई क्लायमेट न्यूज के चार संस्करण तैयार किये गये और भा.वा.अ.शि.प. में अपलोड किये गये।
- स्लेम के प्रकाशन
  - स्लेम–ई. न्यूजलैटर जून 2013 खण्ड 1 नं. 5 तथा दिसम्बर 2013 खण्ड 6 नं. 6
  - 'ड्राट एंड वाटर स्केरेसिटी, पर एक दिवसीय सेमीनार की कार्यवाहियां
  - स्लेम की सर्वोत्तम पद्धतियों पर कुछ पन्ने प्रकाशित किये गये।
  - अर्द्ध वार्षिक रिपोर्ट स्लेम–टी.एफ.ओ. परियोजना।

प्रकाशनों के आवरण पृष्ठ

भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों द्वारा राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठित जर्नलो तथा पुस्तकों में 411 अनुसन्धान लेख प्रकाशित किये गये। संस्थानों के अनुसार विवरण इस प्रकार है :

क्र.सं.	संस्थान का नाम	वैज्ञानिक जर्नल्स और पुस्तकें/कार्यवाहियों में प्रकाशित अनुसन्धान लेखों की संख्या		
		राष्ट्रीय जार्नल्स	विदेशी जार्नल्स	कार्यवाहियों में पुस्तक अध्याय
1.	व.अ.सं., देहरादून	53	44	19
2.	का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर	22	27	21
3.	व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर	21	17	61
4.	शु.व.अ.सं., जोधपुर	14	14	26
5.	उ.व.अ.सं., जबलपुर	18	1	9
6.	व.व.अ.सं., जोरहाट	8	13	6
7.	हि.व.अ.सं., शिमला	10	–	2
8.	व.जै.सं., हैदराबाद	2	–	3
	कुल	148	116	147

इसके अलावा वर्ष के दौरान भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों द्वारा सेमीनारों/सम्मेलनों/कार्यशालाओं में नीचे दिये गए विवरणानुसार 95 अनुसन्धान लेख प्रस्तुत किये गये और 181 सारांश, 25 लोकप्रिय लेख प्रकाशित किये गये:

क्र. सं.	संस्थान का नाम	सारांश तथा लोकप्रिय लेखों सहित सेमीनारों/सम्मेलनों/कार्यशालाओं में प्रस्तुत लेखों की संख्या		
		प्रस्तुत लेख	सारांश प्रकाशित	लोकप्रिय लेख
1.	व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर	18	54	4
2.	व.अ.सं., देहरादून	32	7	9
3.	का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर	33	6	–
4.	व.व.अ.सं., जोरहाट	–	57	4
5.	उ.व.अ.सं., जबलपुर	8	28	5
6.	शु.व.अ.सं., जोधपुर	–	22	–
7.	हि.व.अ.सं., शिमला	4	7	3
	कुल	95	181	25

उपुर्यक्त के साथ–साथ वर्ष के दौरान भा.वा.अ.शि.प. द्वारा निम्नानुसार 16 पुस्तकें तथा 16 पुस्तिकायें ब्रॉशर्स/पैम्फलेट्स प्रकाशित किये गये:

क्र. सं.	संस्थान का नाम	प्रकाशित/पुस्तक/पुस्तिकाऐ/ब्रॉशर्स/पैम्फलेटस की संख्या	
		पुस्तक	पुस्तक/पुस्तिकाऐं/ब्रॉशर्स पैम्फलेट्स
1.	व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर	8	6
2.	व.अ.सं., देहरादून	4	2
3.	का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर	2	1
4.	व.उ.सं., रांची	1	–
5.	उ.व.अ.सं., जबलपुर	1	–
6.	हि.व.अ.सं., शिमला	–	7
	कुल	16	16

राष्ट्रीय वानिकी पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र

राष्ट्रीय वानिकी पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र (एन.एफ.एल.आई.सी.) दक्षिण तथा दक्षिण पूर्व एशिया में वानिकी प्रलेख एवं सम्बद्ध विज्ञानों का सबसे समृद्ध संग्रह है। इसमें विभिन्न पुस्तकालयी सूचनायें दी गई हैं। यथा : संदर्भ, रेफरल, लेंडिंग, रिप्रोग्राफी, करन्ट अवेयरनेस, इन्टर लाईब्रेरी लोन, मशीन रीडेबल डाटा बेस से सूचनाओं का प्रतिगमन आदि को उपभोक्ताओं तक पहुंचाया जाता है। वर्ष के दौरान 27,117 पुस्तकें उपभोक्ताओं को बाहर ले जाकर पढ़ने को दी गई। इसके अलावा 57,355 प्रलेखों पर पुस्तकालय में परामर्श किया गया।

एन.एफ.एल.आई.सी. के प्रलेख संग्रह में 2726 पुस्तकें तथा अन्य प्रलेख शामिल किये गये जिनमें से 125 पुस्तकें रू. 1.83 लाख में खरीदी गई। एन.एफ.एल.आई.सी. द्वारा 66 भारतीय तथा 89 विदेशी पीरियोडिकल्स में अंशदान दिया जाता है, इसे ग्रेटिस के रूप में 680 पीडियोडिकल्स मिलते हैं। एन.एफ.एल.आई.सी. द्वारा भा.वा.अ.शि.प. के क्षेत्रीय संस्थानों की पहुंच के लिए ऑन–लाईन पर 184 ई–जार्नलस दिये जाते हैं। वानिकी विज्ञान पर एक ग्रंथ सूची डाटाबेस को भी अशंदान दिया गया जिससे भा.वा.आ.शि.प. के सभी संस्थानों और केंद्रों को वानिकी पर पुराने तथा नवीन अनुसंधान लेखों पर पहुंच प्रदान की जा सके।

एन.एफ.एल.आई.सी. ने प्रकाशन वर्ष के दौरान अपने बुक डिपो से भा.वा.अ.शि.प. की पुस्तकों का विक्रय किया और राज्य वन विभागों, विश्वविद्यालयों आदि को 564 पुस्तकें तथा 12–वी.सी.डी. बेची गई और रू. 163.836/– का राजस्व प्राप्त किया गया।

7.1.2. पर्यावरणीय सूचना पद्धति केन्द्र (एन विस)

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वानिकी पर पर्यावरणीय सूचना पद्धति केंद्र (इनविस) की एन.एफ.एल.आई.सी., एफ.आर.आई. में स्थापना की गई। इन्विस केन्द्र द्वारा नये संदर्भों के अलावा निम्न लिखित पांच डाटाबेस बनाये गये हैं : भारतीय वानिकी सार–संग्रह, सहभागित वन प्रबन्धन, *प्रॉस्पिस ज्यूलीफ्लोरा, पॉपलार्स* तथा पर्यावरण एवं वन केन्द्र ने "भारत में यूकेलिप्टस" नामक पुस्तक का प्रकाशन किया और पर्यावरण तथा वन न्यूज डायजेस्ट के पांच संस्करण संकलित किये।

7.2. विकसित प्रौद्योगिकी का विस्तार

- विश्व पर्यावरण दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय वानिकी दिवस, विज्ञान दिवस तथा जीवविज्ञानीय विविधता पर अन्तर्राष्ट्रीय दिवस पर और विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों

के जरिये व.अ.स. देहरादून द्वारा विभिन्न हितधारकों को विभिन्न तकनीकों का प्रदर्शन किया गया।

- व.अ.सं., देहरादून द्वारा जी. वी. पंत कृषि विश्वविद्यालय पंतनगर (उत्तराखण्ड) में आयोजित किसान मेले मेंकिसानों तथा अन्य हितधारकों के समक्ष कृषि वानिकी पद्धतियों महत्वपूर्ण वन वृक्ष प्रजातियों के वनस्पतिक प्रवर्धन तकनीको का प्रदर्शन किया गया।
- व.अ.सं., देहरादून द्वारा सुगंधित तेल निष्कर्षण के आरम्भिक स्तर का प्रदर्शन किया गया जिसमें हाइड्रोडिस्टीलेशन तथा वाष्प डिस्टीलेशन तकनीकों का प्रयोग किया गया और विभिन्न भौतिक रासायनिक गुणों के आधार पर संगन्ध तेलों, खुशबू और गंध चिकित्सा का गुणवत्ता आकलन इत्यादि का प्रदर्शन प्रशिक्षुओं के सम्मुख किया गया।

7.2.1. वन विज्ञान केन्द्र (वी.वी.के.) तथा प्रदर्शन ग्राम (डी.वी.)

- व.अ.सं., देहरादून ने आज तक राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों में अपने अधिकार क्षेत्र के तहत 6 वन विज्ञान केन्द्र स्थापित किये गये है और "वन विज्ञान केन्द्र नेटवकिंग तथा कृषि विज्ञान केन्द्र" के तहत यमुनानगर जिले में दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये है। व.अ.सं. द्वारा पटियाला में कृषि वानिकी पर विकसित तकनीकों का प्रदर्शन किया गया और किसान मेला, के.वी.के. में व्याख्यान दिये गये।
- व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा कैज्यूरियाना के चार लाख स्तरीय रोपण स्टॉक तैयार किये गये जिन्हें थाने चक्रवात से पीड़ित तमिलनाडू और पुडुचेरी के विल्लूपुरम जिले के किसानों में बांटा गया।
- व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने नया जैव कीटनाशक उत्पाद (एच.वाई–एक्ट एवं ट्री पाल सच) तथा वृद्धि वृर्धक उत्पाद (ट्रीरिचबायो बूस्टर) विकसित किया जिसका व.आ.वृ.प्र.सं, कोयम्बटूर की प्रेरणा शॉप, चिन्नमया ग्रामीण विकास संगठन, श्री अविदनाशी लिंगम केन्द्र, कृषि विज्ञान केन्द्र, विवेकानंद पुरम, के. वी.के. तमिलनाडू तथा पुडुचेरी, वी.वी.के., एन.जी.ओ. तथा जड़ी एवं वृक्ष उत्पादक संघ, कोयम्बटूर द्वारा वाणिज्यीकरण किया गया।
- संस्थान द्वारा तमिलनाडू तथा पुडुचेरी के कृषि विज्ञान केन्द्र को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए तमिलनाडू कृषि विश्वविद्यालय तथा तमिलनाडू वन विभाग के सहयोग से "वृक्ष खेती की प्रौद्योगिकियों" पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा विभिन्न हितधारकों के समक्ष, *टेक्टोना, कैज्यूरियाना, यूकेलिप्टस, मेलिया एलन्थस, मेलीना आर्बोरिया, नियोलामार्किया कदम्बा* तथा *कैलोफाईलम इनोफाईलम* का प्रस्तुतीकरण किया गया साथ ही, व. आ.वृ.प्र.सं., कोयमबटूर द्वारा विकसित उत्पादों और तकनीकों अर्थात एन. फिक्सर, एच.वाई. एक्ट, वृक्ष समृद्ध जैव वर्धक, ट्री पाल, वायुरोधक कृषि वानिकी पद्धतियों, कैज्यूरियाना आधारित "ऐले क्रॉपिंग" पद्धति, लाल और मृदु टेमारिंड, वृक्ष कीट प्रबन्धन तथा यूकेलिप्टस और कैज्यूरियाना के कृन्तक विस्तार का बहुत से हितधारकों में प्रसार किया गया।
- व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर औद्योगिक आधारित कृषि वानिकी प्लांट को 2 हे. में स्थापित किया गया और 8 किसानों के खेत बन्धों में कन्डीयूर, वी.वी.के. प्रदर्शन गावों में *टैक्टोना* तथा *मेलीना* के 3000 पौधों को रोपित किया गया और बोर–वेल की खुदाई करके सिंचाई का प्रबन्धन किया गया।
- व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा वी.वी.के. तथा के.वी.के., केरल में के.वी.के. थ्रिसूर में प्रथम अन्तः सक्रिय बैठक का आयोजन किया गया।
- का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर द्वारा एफ.टी. ए.टी.आई, कदूगोडी के सहयोग से इसके कदूगोडी स्थित वन विज्ञान केन्द्र में कर्नाटक वन विभाग के अग्रगामी स्टॉफ के लिए वाणिज्यिक रूप से महत्वपूर्ण प्रकाष्ठ प्रजातियों, की पहचान, रोपण बनाम व्यावसायिक प्रकाष्ठ के गुणों, बांस के संशोषण तथा परिरक्षण, चन्दन और बांस की पौधशाला तकनीकों और उनके नाशीकीट तथा रोग प्रबन्ध तकनीकों पर दिनांक 14 और 22 नवम्बर 2013, 06 और 13 दिसम्बर 2013 तथा 10 जनवरी 2014 तक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।
- का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर चन्दन आधारित कृषि–वानिकी मॉडल पर के.वी.के. कर्नाटक तथा गोवा के विषय विशेषज्ञों के साथ दिनांक 06 से 08 जनवरी 2014 तक बैंगलोर में प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- उ.व.अ.सं., जबलपुर में पास चार वी.वी.के. हैं, जिनमें से एक–एक, वी.वी.के. मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ, महाराष्ट्र

तथा उड़ीसा में हैं, साथ ही एक प्रदर्शन ग्राम भी है, जो बिजादाण्डी, पश्चिमी माण्डला वन प्रभाग में मोइया नाला में है। इन वी.वी.के. में कार्यक्षेत्रीय स्टॉफ के लिए विकसित की गई तकनीकों पर नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं और भागीदारों को प्रशिक्षण हेतु आवश्यक सामग्री मुहैया कराई जा रही है।

- कृषि वानिकी के प्रख्यापन के लिए किसानों के समक्ष प्रदर्शन और वितरण के लिए शु.व.अ.सं., जोधपुर द्वारा हाईटेक नर्सरी वी.वी.के. बिछावल, बीकानेर में *प्रोसोपिस सिनरेरिया* और *डल्बर्जिया सिस्सू* के स्तरीय रोपण स्टॉक को उगाया गया। मृदा एवं जल संरक्षण, सिल्वी पेस्चर, कृषि वानिकी, स्तरीय बीज उत्पादन और बीज भण्डारण के साथ–साथ स्तरीय रोपण स्टॉक के उत्पादन, धन वृक्षों के चयन, फलोद्यानीय फसलों की खेती एवं प्रबन्धन, औषधीय पादपों की खेती, वी.ए.एम. तथा आर्गेनिक उवर्रकों पर दिनांक 28 से 30 जनवरी 2014 तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। जैसलमेर, डी.डी.पी. तथा आई.जी.एन.पी. प्रभागों, बाढ़मेर, सिरोही, जेलोर, जोधपुर तथा पाली वन प्रभागों के 22 वन कार्मिकों और 12 किसानों सहित 34 भागीदारों ने प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया।
- शु.व.अ.सं., जोधुपर ने अपनी हाईटेक नर्सरी वी.वी.के. छिपार्डी बीडी., राजकोट (गुजरात) में *इम्बलिका आफीसनेल्स* तथा *जिजीफस मौरीशियाना* के कमलयुक्त पौधों की कैज्यूरियाना पौधों को *कैज्यूरियाना इक्वेस्टीफोलिया, यूकेलिप्टस* हाईब्रिड के उत्तम पौधों के साथ उगाकर किसानों के समक्ष प्रदर्शित एवं वितरित किया। "नर्सरी स्थापना एवं प्रवंधन, वृक्ष सुधार, कृषि वानिकी के आर्थिक लाभ, उच्च उत्पादन के लिए एग्री–हार्टी पद्धति की सुधारित तकनीकों, मृदा एवं जल संरक्षण और गुजरात में औषधीय पादपों की खेती और जलसंरक्षण" पर दिनांक 3 से 5 अक्टूबर 2013 तक तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें गुजरात तथा दादरा और नागर हवेली के बयालीस भागीदार शामिल हुये। स्तरीय रोपण स्टॉक उगाने के लिए सलवास (जोधपुर) के प्रदर्शन गांवों की हाईटेक पौधशालाओं तथा प्रदर्शन भू–खंडों का अनुरक्षण किया गया।
- शु.व.अ.सं., जोधुपर द्वारा दिनांक 9 से 13 दिसम्बर 2013 तक बांस प्रौद्योगिकी सहायता वर्ग "बांस हस्तशिल्प" पर राजस्थान और गुजरात किसानों और शिल्पकारों के कौशल उन्नयन पर प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- शु.व.अ.सं., जोधपुर द्वारा दिनांक 16 जनवरी 2014 को गाजपुर, कुंभालगढ़, दिनांक 17 जनवरी 2014 को ढीलोदिया जनावत, राजस्मंड और दिनांक 12 फरवरी 2014 को सुंदर्चा, राजसमंद में किसानों तथा अन्य हितधारकों के लिए "जैट्रोफा की खेती" पर तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। किसानों को *जैट्रोफा करकस* की खेती, महत्व, कृषि पद्धतियों और भविष्य की सम्भावनाओं के प्रति जागरूक किया गया।
- व.व.अ.सं., जोरहाट के पास असम, अरूणाचल प्रदेश, मीजोरम, नागालैन्ड और त्रिपुरा में पाँच वन विज्ञान केन्द्र हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रमों के साथ–साथ विभिन्न वन आधारित उद्योगों अर्थात अगरबत्ती, फर्नीचर आदि व.व.अ.सं., जोरहाट के सम्बन्ध में अनुसन्धान केन्द्रों में जानकारियां दी गई।
- व.व.अ.सं., जोरहाट ने सहभागिता ग्रामीण उन्नयन मेलांग ग्रांट में तीन गावों की सीमा पर हूलांगपार गिब्बन वन्य जीव अभयारण्य में प्रदर्शन ग्राम की स्थापना की। ग्रामीणों ने, मधुमक्खी पालन, वर्मिन कम्पोस्ट उत्पादन, किसानों के खेतों में *अकेशिया मैंजियम* का रोपण तथा भूत जोलोकिया *(कैप्सीकम चाईनेन्सी)* एरीक नट एग्रो फॉरेस्ट्री मॉडल जैसे क्रियाकलापों को अपनाया। इसके लिए किसानों को

भूतजोल्किया पौधशाला और प्रदर्शन ग्रामों में अरेका–भूतजोल्किया कृषि वानिकी मॉडल – व.व.अ.सं., जोरहाट में किसानों के खेतों में इसका विस्तार।

भूत जोल्किया मुहैया कराये गये। भूत जोल्किया–अरेका नट फॉरेस्ट्री मॉडल के उत्साह वर्धक परिणाम मिले और किसानों ने अतिरिक्त आय के लिए इसे अपनाया।

- प्रदर्शन ग्राम कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रदर्शन ग्राम गोविन्द पुर और भोगपुर में अगर (*अक्वीलेरिया मैलासेन्सिस*) की पौधशाला स्थापित की गई।

व.व.अ.स., जोरहाट में प्रदर्शन ग्राम में खेतों में पौधशालाओं की स्थापना

- हि.व.अ.सं., शिमला में दिनांक 30 जुलाई 2013 को के. वी.के. के साथ वी.वी.के. का प्रशिक्षण आयोजित किया गया।
- इसी प्रकार हि.व.अ.सं., शिमला के.वी.के., सरू, चम्बा (हि.प्र.) में दिनांक 26 से 26 नवम्बर 2013 तक वन विभाग के अग्रगामी कार्मिकों तथा किसानों के लिए औषधीय पादपों के संरक्षण, उपयोजन तथा खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- वी.वी.के. जानीपुरा, जम्मू के क्रियाकलापों के तहत दिनांक 08 जुलाई 2013 को हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा लेह–लद्दाख में प्रौद्योगिकीय तथा अनुसन्धान आवश्यकताओं पर वन उत्पादकता वृद्धि हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- हि.व.अ.सं., शिमला ने मॉडल ग्राम लानाबंका के प्रदर्शन रोपण में प्रदर्शन पौधशाला का अनुरक्षण किया। लानाबंका पंचायत के ग्रामीणों को स्तरीय रोपण सामग्री के रूप में रोपण के लिए 1000 बांस प्रजाति के पौधे मुहैया कराये गये।

7.2.2. "उपभोक्ताओं से सीधा सम्पर्क" योजना

"उपभोक्ताओं से सीध सम्पर्क" योजना की शुरूआत जुलाई 2011 में भा.वा.अ.शि.प. द्वारा अनुसन्धान की सफलताओं को बिना किसी विलम्ब के उपभोक्ताओं तक सीधे पहुंचाने के लिए की गई ताकि अनुसन्धान निष्कर्षों का सीधा सम्बन्ध लोगों की आजीविका के साथ जोड़ जा सके। राज्य वन विभागों, किसानों, उद्योगों और ग्रामीण समुदायों को इस योजना से लाभ हो रहा है। योजना के पहले चरण में वर्ष 2012–13 में 16 परियोजना का चयन एवं क्रियान्वयन किया गया। वर्ष 2013–14 के दौरान 6 नई परियोजनायें शुरू की गई और 2012–13 से 9 परियोजनायें जारी थी। वर्ष 2013–14 में कुल 15 परियोजनायें जारी थी।

"उपभोक्ताओं से सीधा सम्पर्क" योजना के तहत व.अ.सं., देहरादून ने निम्नलिखित क्रियाकलाप आयोजित किये :

- बांस प्रक्रमण और प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना।
- श्यामपुर और कंडोली गांवों में एन.जी.ओ. (बाग्वान और स्पेक्स) के सहयोग से *गैनोडर्मा ल्यूसीडियम* के कल्टीवेशन परीक्षण किये गये।
- "खाद्य और औषधीय" मशरूम पर देहरादून के गांवों (शक्लापुर, उम्मेदपुर, देवीपुर, पीताम्बरपुर) में दिनांक 19 अगस्त 2013 को एन.जी.ओ. बाद्यबन के सहयोग से जागरूकता कार्यक्रम चलाया गया।
- विभिन्न संगठनों के विद्यार्थियों और अनुसन्धानकर्ताओं तथा विशिष्ट व्यक्तियों और प्रशिक्षणर्थियों को बम्बूसेटम, उद्भिज्जालय, वानस्पतिक गार्डन का भ्रमण कराया गया।

कार्यक्रम के तहत शु.व.अ.सं., जोधुपर ने निम्नलिखित क्रियाकलाप किये :

- मेहन्दी *(लासोनिया इन्टर्मिस)* पर नाशीकीटों के आक्रमण को नियंत्रित करने हेतु निमाज, पाली में किसानों के खेतों में मोनोक्रोप्टोफोस (0.05%)+ बॉविस्टिन (0.01%)+औजिन (@ 2एम.लए/लीटर) तथा 'प्रतिरोध' जैवकीटनाशक का अनुप्रयोग, पर्ण निष्पत्रक (सेमीलूपर *एकिया जनाटा–नॉक्टीडि*)

पर्ण धब्बे करने वाले और अंगमारी (*अल्टर्नेरिया* प्रजाति) पर किया गया। उपचारित भू–खण्डों में पुनः इस तरह के नाशिकीट अथवा रोग नहीं पाये गए।

- बिलवास (सोजात) पाली में किसानों के खेतों में ईसबगोल (*प्लान्टगो प्रजा.*) पर रोग और कीट समस्या के निदान हेतु प्रदर्शन परीक्षण किया गया। बैविस्टीन (1.5%) या रतन (0.2%) + मोनोक्रोप्टोफोस (0.05%) का उपयोग डाउनी मिल्डयू रोग *(पेरोनोस्फोरा अल्टा)* तथा एफिड आक्रमण के विरूद्ध किया गया। उपचारित भू–खण्डों में पुनः इस तरह का नाशी कीट या रोग नहीं पाया गया।
- निम्नीकृत पहाड़ियों के पुनर्स्थापन के लिए "वर्षाजल संचयन तथा वनीकरण" पर दहोद में दिनांक 19 से 20 सितम्बर 2013 तक तथा जोधपुर में दिनांक 23 से 24 जनवरी 2014 तक प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

मेहन्दी और ईसगोल में रक्षण और उत्पादकता वृद्धि हेतु विकसित और आई.पी.एम. रणनीतियां आफरी, जोधपुर

हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा परिषद् के "उपभोक्ताओं से सीधा सम्पर्क" के तहत किये गये क्रिया कलाप :

- प्रशिक्षण, प्रदर्शन कार्यक्रमों तथा शैक्षिक भ्रमणों के जरिये किसानों के पौधशाला उत्पादन कौशल तथा *एकोनीटम हेटरोफाईलम* (आतिश) और *एंगीलिका ग्लोका* (चोरा) की खेती पर किसानों का कौशल उन्नयन किया गया।
- शंकु वृक्षीय परिसर, शिमला तथा पाटर हिल्स, शिमला के शीतोष्ण औषधीय पादपों पर दिनांक 26 दिसम्बर 2013 को एक दिवसीय अभिज्ञान एवं प्रशिक्षण दौरे का आयोजन किया गया जिसमें औषधीय पादपों को उगाने की विभिन्न तकनीकों के बारे में बताया गया।

इस योजना के तहत व.उ.सं., रांची ने निम्नलिखित क्रियाकलाप आयोजित किये :

- सुयोग्य प्रशिक्षकों जिन्हें संस्थान के विशेषज्ञों ने प्रशिक्षित किया था, द्वारा जिला खुंटी, झाड़खण्ड के किसानों को लाख की वैज्ञानिक ढंग से खेती करने हेतु प्रशिक्षित किया गया। रांची में *फ्लेमिंजिया सेमिअलाटा* के लाख परपोषियों का स्तरीय रोपण स्टॉक उगाया गया। 17 किसानों को 19100 पौधे आवंटित किये गये जिन्हें 0.75 X 2 मीटर की दूरी पर खेतों में रोपित किया गया।
- दिनांक 16 जुलाई 2013 को लाईफ एज्यूकेशन तथा विकास सपोर्ट एन.जी.ओ. के सहयोग से पश्चिमी सिंह भूमि जिले में *फ्लेमिंजिया सेमिअलाटा* द्वारा लाख की खेती को बढ़ावा देने के लिए कार्य क्षेत्रीय प्रशिक्षण एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें पश्चिमी सिंहभूम जिले के बंदगांव ब्लॉक के पंद्रह तथा खूंटी जिले के मुरू ब्लॉक के पंद्रह किसानों ने भाग लिया।
- दिनांक 27 मार्च 2014 को रांची में गैर परम्परागत परपोषी *फ्लेमिंजिया* प्रजाति की सतत् वानिकी रोपण में सम्भावनाओं पर हितधारकों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने वायुरोधक कृषि–वानिकी पद्धति द्वारा तमिलनाडू राज्य वन विभाग के सहयोग से परिषद् की "उपभोक्ताओं की सीधा सम्पर्क" नीति के तहत 3 हे. प्रदर्शन भू–खंडों की स्थापना की।

7.2.3. प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

- भा.वा.अ.शि.प. द्वारा जहां तक व्यवहार्य हो, अनुसंधान परिणामों को खुले रूप में शीघ्रता से विस्तारित और साझा करने का प्रयास किया जाता है। साथ ही, भा.वा.अ.शि.प. अपनी प्रौद्योगिकी को भारतीय तथा अन्य प्रायोज्य विदेशी बौद्धिक सम्पदा कानूनों के अंतर्गत रक्षित करने के महत्व को भी पहचानती है और तदनुसार, जनता की भलाई और कल्याण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की ओर सचेत रहते हुए उपयुक्त रूप से लिए अनुसंधान परिणामों का वाणिज्यीकरण किया जाता है। इस प्रक्रिया में भा.वा.आ.शि.प. तथा उसके विभिन्न संस्थानों से निसृत हो रही बौद्धिक सम्पदा के सृजन और प्रबंधन के संचालन हेतु सामग्री हस्तांरण अनुबंध (एम टी ए), अनुज्ञप्ति अनुबंध (एल ए) सहित एक व्यापक पॉलिसी का विकास किया गया है।
- व.अ.सं., देहरादून ने भारतीय लुग्दी एवं कागज उद्योगों तथा अनुसन्धान संगठनों को तकनीकी सेवायें प्रदान की हैं और विभिन्न सरकारी संगठनों से प्राप्त कागज के नमूनों की भौतिक तथा आप्टीकल जांच की है, जैसे रोजगार समाचार, भारतीय सेना एम.सी.ई.आर.टी. और निजी उद्योग जैसे मेसर्स आयुक्त राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल, मै. जिला शिक्षा केन्द्र, बैतुल (म.प्र.), मै. जिला शिक्षा केन्द्र शिवपुरी (म.प्र.), मैसर्स जिला शिक्षा केन्द्र सर्व शिक्षा अभियान, खरगांव (म.प्र.)।
- पादप जैवमात्रा से कम्पोस्ट तकनीक के उत्पादन का प्रदर्शन किया गया और दिनांक 6 दिसम्बर 2013 को 1. 20 लाख लाईसेन्स शुल्क सहित मैसर्स आनन्द आर्गेनिक्स कृषि उद्योग नागपुर (महाराष्ट्र) को हस्तान्तरित किया गया।
- भा.वा.अ.शि.प. की वैराइटी रिलीजिंग समिति (वी.आर.सी.) ने व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा विकसित *कैज्यूरियाना झुंजयाना* के दो क्लोन, *कज्यूरियाना इक्वेस्टीफोलिया* के तीन तथा *यूकेलिप्टस कमाल्डुल्नीसिस* के सात क्लोन्स को दिनांक 8 मार्च 2014 को जनता में अवमुक्त करने हेतु अनुमोदित किया।
- तेजी से उगने वाली प्रजातियों जैसे *कैज्यूरियाना मेलीना, एलन्थस, मीलिया, टेक्टोना* तथा *यूकेलिप्टस* को पारिमित्र कार्बनिक सामग्री के साथ वृद्धि सुधार के लिए विकसित किया गया और व.आ.वृ.प्र.सं. में वृक्ष उत्पादक मेले में दिनांक फरवरी 2013 को अवमुक्त किया।
- का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर द्वारा मैसर्स प्वाइंटेक पेन, बैंगलोर को काष्ठ पॉलीमर कम्पोजिट तकनीक का हस्तांतरण किया गया। फर्म द्वारा संस्थान को 10 लाख रू. लाईसेन्स फीस दी गई।
- उ.व.अ.सं., जबलपुर द्वारा उडीसा वन रेंजर्स कॉलेज अंगुल में दिनांक 12 से 13 मार्च 2014 को भा.वा.अ.शि.प. द्वारा विकसित अनुसन्धान निष्कर्षों के नेटवर्क तक पहुंच बनाने के लिए सेमीनार एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया। साथ ही, बेल के फलों की प्रक्रमण तकनीक, अकाष्ठीय वन उत्पादों की ड्रम ड्रायर तकनीक, लन्टाना से हस्तनिर्मित कागज का विकास, *टर्मीनेलिया अर्जुना* के वल्कलों का अहानिकर तकनीक से संदोहन, *एस्प्रोगस रेसीमोसा* की कृषि तकनीक, *एन्ड्रोग्रेफिस पेनीक्यूलाटा* की कृषि तकनीक, *रावाफोलिया सर्पेन्टियाना* की कृषि तकनीक तथा *वाटेनिया सोम्नीफेरा* की कृषि तकनीकों को हितधारकों में हस्तातरित किया गया।
- व.व.अ.सं., जोरहाट ने, पी.आर.ए. तकनीक और माइक्रो प्लांनिंग, बांस उपचार, वर्मीकम्पोस्टिंग, मधुमक्खी पालन, पचौली कृषि तकनीक, ट्राईकोडर्मा उत्पादन एवं कार्यक्षेत्रीय अनुप्रयोग, माइकोरिजियल तकनीक, जैव कीटनाशक उत्पादन एवं कार्यक्षेत्रीय अनुप्रयोग, बीज प्रहस्तन – श्रेणीकरण एवं बोआई तकनीक, चिली आधारित कृषि–वानिकी मॉडल की तकनीक, स्पेगनम तकनीक का उपयोग करते हुये बहुत से आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियों के लिये एयर लेयरिंग तकनीक, कम लागत का वर्मीकम्पोस्ट, अगर एक्वीलेरिया मेलास्सिन्सिस उगाने तकनीक, कार्यक्षेत्र में मस्क दाना (*एबिल्मोस्क्स मोस्चाटस*) का रोपण और खेती की तकनीकों को हस्तांतरित किया।

7.3. वानिकी अनुसन्धान में व्यापक विस्तार रणनीतियों का संयोजन एवं विकास

7.3.1. सतत भूमि एवं पारि–पद्धति प्रबन्धन (स्लेम) परियोजना

परियोजना के तहत वर्ष के दौरान निम्नलिखित क्रियाकलापों को अन्जाम दिया गया

- वैज्ञानिकों तथा वन कार्मिकों की क्षमता वृद्धि के लिए हिमालयी वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला में दिनांक 3 से 4 अक्टूबर 2014 को "जलवायु परिवर्तन अनुकूलन हिमालयी क्षेत्र" पर प्रशिक्षण एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- उ.व.अ.सं., जबलपुर में म.प्र. वन विभाग के अग्रगामी स्टॉफ के लिए दिनांक 3 से 7 फरवरी 2014 को बांस आधारित शिल्प पर आजीविका बढाने हेतु किसानों और शिल्पकारों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में तमिलनाडू वन विभाग के अग्रगामी स्टॉफ के लिए दिनांक 19–20 फरवरी 2014 को "सतत् जीविकोपार्जन हेतु दक्षिण भारत में भूमि पुनर्स्थापन एवं जैवविविधता संरक्षण" का आयोजन किया गया।
- "रेगिस्तानीकरण, भूमि निम्नीकरण एवं सूखे के की समस्या के समाघात सूचकों को अंतिम रूप देने के लिए'' दिनांक 30 अगस्त 2013 को हैदराबाद तथा दिनांक 29 अक्टूबर 2013 को कोलकात्ता में परामर्शी कार्यशाला का आयोजन किया गया। रेगिस्तानीकरण, भूमिनिम्नीकरण तथा सूखे पर काम करने वाले 25 विशेषज्ञों ने इसमें भाग लिया।
- "रेगिस्तानीकरण, भूमि निम्नीकरण तथा सूखे के समाघात सूचकों को अंतिम रूप देने के लिए दिनांक 28 जनवरी 2014 को नई दिल्ली में राष्ट्रीय परामर्शी कार्यशाला का आयोजन किया गया। विभिन्न मंत्रालयों, अनुसन्धान एवं विकास संस्थानों, स्लेम योजना भागीदारों, यू.एन. निधिकरण निकायों तथा सिविल सोसाइटी संगठनों के लगभग 40 प्रतिभागियों ने कार्यशाला में भाग लिया।
- भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में रेगिस्तानीकरण को रोकने हेतु विश्व दिवस मनाने हेतु ''सूखा एवं जल की कमी'' विषय पर एक सेमीनार का दिनांक 17 जून 2013 को आयोजन किया गया जिसमें भा.वा.अ.शि.प. और व.अ.सं. के वरिष्ठ अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों सहित 80 भागीदार शामिल थे।
- पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा गठित स्लेम परियोजना की संचालक समिति की चौथी बैठक हैदराबाद में दिनांक 4–5 अप्रैल 2013 को आयोजित की गई। बैठक का उद्देश्य स्लेम परियोजना की प्रगति की विवेचना करना था। दिनांक 13 फरवरी 2014 को एन.एस.सी.की. पांचवीं बैठक का आयोजन भोपाल में किया गया।

स्लेम परियोजना के तहत आयोजित कार्यशाला/सेमीनार

- स्लेम–टी.एफ.ओ. के जलवायु परिवर्तन पर विषयक क्षेत्र के तहत श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार), डॉ. टी. पी. सिंह., परियोजना निदेशक, स्लेम परियोजना तथा डॉ. आर.एस. रावत, तकनीकी प्रबन्धक स्लेम परियोजना ने बहुआयामी वन जैवमात्रा आकलन भूस्थानिक सूचना पद्धति एवं हिंदुकुश हिमालय क्षेत्र की मॉनिटरिंग पर विशेषज्ञों की बैठक में भाग लिया जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र में संयुक्त पर्वतीय विकास, काठमाण्डु, नेपाल में दिनांक 9 से 10 दिसम्बर 2013 तक विचार–विमर्श किया गया।

7.3.2. आयोजित सेमीनार / सेम्पोजिया / कार्यशाला

- व.अ.सं., देहरादून में "भारत में कार्बन वन कार्बन वित्त के लिये नवाचार'' पर भा.वा.अ.शि.प., व.अ.सं. तथा वेल्सपन ऊर्जा लिमिटेड द्वारा दिनांक 28 मई 2013 को कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य अनुसन्धान संस्थानों, वैज्ञानिकों, उद्योगों तथा राज्यों तथा केन्द्र सरकार के प्रतिनिधियों के साथ विचार–विमर्श करके वन कार्बन पर गंम्भीता से विचार करना था।
- व.अ.सं., देहरादून में केन्द्रीय हिमालयी पर्यावरण संघ, जी.आई.जेड़ के सहयोग से दिनांक 19 सितम्बर 2013 को "उत्तराखंड 6/16 : विश्लेषण, शिक्षा एवं न्यूनीकरण रणनीतियों" पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- व.अ.सं., देहरादून द्वारा दिनांक 9 से 10 अक्टूबर 2013 को "रिपोर्टिंग राइटिंग" पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- व.अ.सं., देहरादून द्वारा दिनांक 13 जनवरी 2014 को "काष्ठ आधारित उद्योगों को सतत् प्रकाष्ठ आपूर्ति में कृषि वानिकी की भूमिका" पर कार्यशाला एवं किसान मेला का आयोजन जी.बी.पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर में किया गया।
- व.अ.सं., देहरादून द्वारा दिनांक 30 से 31 जनवरी 2014 को देहरादून में "वनीय तथा गैर वनीय क्षेत्रों में बांस उत्पादकता" पर बी.टी.एस.जी.–भा.वा.अ.शि.प. द्वारा प्रायोजित सेमीनार का आयोजन किया गया। सेमीनार में राज्य वन विभाग के अधिकारियों, किसानों, निजी बांस उगाने वालों, एन.जी.ओ., राष्ट्रीय बांस मिशन के कार्मिकों, नाबार्ड और विभिन्न अनुसन्धान संस्थानों के वैज्ञानिकों ने भाग लिया।
- वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून में सीडार तथा केन्द्रीय हिमालयी पर्यावरण के सहयोग से दिनांक 26 मार्च 2014 को ''जून 2013 की त्रासदी के उपरान्त वर्तमान ज्ञान की स्थिति और आगे का मार्ग'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- व.अ.सं., देहरादून द्वारा दिनांक 27 से 29 मार्च 2014 को देहरादून में "वानिकी में जैव सूचना का अनुप्रयोग'' पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- व.अ.सं., देहरादून द्वारा दिनांक 26 से 27 फरवरी 2014 को देहरादून में "वन बीज विज्ञान–बीज अनुसन्धान में वर्तमान उपलब्धियों एवं चुनौतियों" पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- व.अ.सं., देहरादून द्वारा एशिया प्रशांन्त वानिकी अनुसन्धान संघ तथा कोरिया वन अनुसन्धान संस्थान, कोरिया गणराज्य के सहयोग से देहरादून में दिनांक 23–25 सितम्बर 2013 को "पानी और वन–परम्परागत जलविज्ञान के अतिरिक्त" पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा दिनांक 10 जून 2013 को कोयम्बटूर में "यूकेलिप्टस गाल–वेस्प–वर्तमान स्थिति तथा भविष्य की रणनीतियां" पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें बड़े पैमाने पर यूकेलिप्टस रोपणकर्ताओं जैसे कागज उद्योगों, राज्य वन विभागों, वन विकास निगमों, किसानों तथा गाल–वेस्प और उसके प्रबन्धन पर शोधकर्ताओं ने भाग लिया।
- व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा 28–29 नवम्बर 2013 को कोयम्बटूर में "वृक्ष बीज विज्ञान एवं संवर्धन" पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। संस्थान में अनुसन्धान के 25 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में दो पुस्तकों, "वन बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी'' तथा ''सांवर्धनिक प्रौद्योगिकीयों पर सारसंग्रह" का विमोचन किया गया। कैज्यूरियाना रोपणियों के उत्पाद का परिकलन करने के लिए 'साइकस' साफ्टवेयर तथा संस्थान के नौवें न्यूजलैटर का विमोचन भी किया गया। कार्यशाला में भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों, काष्ठ आधारित उद्योगों, वन विभागों, विश्वविद्यालयों, एन.जी.ओ, विद्यार्थी आदि सहित सोलह राज्यों के 120 भागीदार

शामिल हुये। कार्यशाला में 40 पोस्टर तथा 50 प्रलेख प्रस्तुत किये गये।

- व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा ममालपुरम (तमिलनाडू) में दिनांक 03 से 07 फरवरी 2014 तक कैज्यूरियाना पर पांचवीं अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में नौ देशों के करीब 100 भागीदार शामिल हुये, जिन्होने कैज्यूरियाना पर अनुसन्धान अध्ययन का उल्लेख किया।
- व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा दिनांक 23–24 सितम्बर 2013 को कोयम्बटूर में "वृक्ष जैव तकनीक 2013–वानिकी तथा वृक्ष विज्ञान के सुअवसर" पर राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया। "सिलिको जीन बैंक" पर जैवकीय दबाव उन्मूलन के लिए वेबसाईट लांच किया गया। करीब 60 अनुसन्धान के प्रलेख प्रस्तुत किये गये और सेमीनार कार्यवाई में देश के 53 संगठनों के भागीदार शामिल हुये।
- का.वि.प्र.सं., बैंगलोर में कर्नाटक राज्य जैव–ईंधन विकास बोर्ड और कर्नाटक राज्य परिषद् विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के सहयोग से दिनांक 22–23 नवम्बर 2014 को बैंगलोर में ''जैव ईंधन में नूतन प्रयास'' कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- का.वि.प्र.सं., बैंगलोर में दिनांक 26 से 28 फरवरी 2014 तक "चन्दन काष्ठः वर्तमान प्रवृत्तियां तथा भविष्य की सम्भावनायें" पर अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया जिसमें आस्ट्रेलिया, फीजी, हवाई, प्रशान्त द्वीप समूह और श्रीलंका के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सेमीनार में समाज के विभिन्न सदस्यों ने भाग लिया जैसे अनुसन्धानकर्ता, वन अधिकारी, उद्योगपति, किसान, रोपणकर्ता, उद्यमी और अन्य।
- उ.व.अ.सं., जबलपुर द्वारा दिनांक 15 से 17 अप्रैल 2013 को "प्रायोगिक सांख्यिकी में प्रगति तथा वानिकी में अनुप्रयोग" पर तीन दिवसीय सेमीनार का आयोजन किया गया।
- व.व.अ.सं., जोरहाट द्वारा दिनांक 6 से 7 फरवरी 2014 तक "भारत में बांस अनुसन्धान एवं विकास पर प्रगति" पर राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया जिसमें करीब पचास अनुसन्धान प्रलेख प्रस्तुत किये गये।
- सार्क वानिकी केन्द्र, भूटान तथा व.व.अ.सं., जोरहाट द्वारा संयुक्त रूप से "जलवायु परिवर्तन समाघात अनुकूलन तथा दक्षिण एशिया में विभिन्न वन किस्मों की स्थिति" पर दिनांक 22 से 24 अक्टूबर 2013 को विशेषज्ञ वर्ग की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें उनके देश में जलवायु परिवर्तन से सम्बन्धित चुनौतियों के बारे में विचार–विमर्श किया गया।
- एम.ओ.ई.एफ. तथा सी.सी. द्वारा निधिकृत परियोजना "वानस्पतिक उद्यान के रूप में दुर्लभ और संकटापन्न पादप प्रजातियों के परास्थानिक संरक्षण के लिए झाड़खंड के मुख्य उद्यान में संरचात्मक सुविधायें" के तहत दिनांक 29 मार्च 2014 को व.उ.सं. द्वारा "दुर्लभ, संकटापन्न तथा लुप्त प्रायः पादप प्रजातियों" पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

भा.वा.अ.शि.प. के संस्थानों द्वारा आयोजित कार्यशालायें/सेमीनार

7.3.3. विशेष क्रियाकलाप जैसे वन महोत्सव, वानिकी दिवस और अन्य अवसर

- व.अ.सं., देहरादून में दिनांक 11 मई 2013 को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस बड़े उत्साह से मनाया गया। संस्थान के सूचना केन्द्र के प्रांगण में विशेष प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें वानिकी क्षेत्र में संस्थान द्वारा वैज्ञानिकों और तकनीकी उपलब्धियों के बारे में बताया गया जिनका उपयोग समाज में किया जा रहा है।

वन अनुसन्धान संस्थान में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस का आयोजन

- विश्व वानिकी दिवस तथा व.अ.सं. दिवस दिनांक 3 जून 2013 को मनाया गया। संस्थान के सूचना केन्द्र के प्रांगण में विशेष प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें संस्थान की वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियां प्रदर्शित की गई।
- वन महोत्सव दिनांक 29 जुलाई 2013 को मनाया गया।
- हिमालयी दिवस दिनांक 9 सितम्बर 2013 को मनाया गया जिसमें "हिमालयी पारिपद्धति का संरक्षण तथा उत्तराखण्ड में सतत् विकास" पर विचार–विमर्श किया गया। इस अवसर पर "हिमालयी पारिपद्धति का संरक्षण" एवं उत्तराखण्ड का सतत् विकास" पर विद्यार्थियों और व.अ.सं., सम–विश्वविद्यालय के लिए निबन्ध प्रतियोगिता तथा केन्द्रीय विद्यालय, व.अ.सं. के विद्यार्थियों के लिए पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- अन्तर्राष्ट्रीय वन दिवस दिनांक 21 मार्च 2014 को मनाया गया और व.अ.सं. के सूचना केन्द्र में व.अ.सं. की

वन अनुसन्धान संस्थान में हिमालयी दिवस समारोह

उपलब्धियों को चित्रित करते हुये पोस्टर्स और मॉडल्स का प्रदर्शन किया गया।

- जैवविविधता पर अन्तर्राष्ट्रीय दिवस दिनांक 22 मई 2013 को मनाया गया और ''आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी प्रणालियों के बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग के लिये नदी बेसिन दृष्टिकोण की प्रासंगिता'' पर डॉ. ई.जे. जेम्स, निदेशक, जल संस्थान–उच्च क्षमता केन्द्र, करूण्या विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर द्वारा विशेष व्याख्यान दिया गया।
- विश्व पर्यावरण दिवस दिनांक 5 जून 2013 को मनाया गया और फॉरेस्ट कैम्पस नेचर क्लब के सदस्यों द्वारा कैम्पस में वृक्षारोपण किया गया।
- काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बगलौर में विश्व बांस दिवस दिनांक 18 सितम्बर 2013 को मनाया गया और कर्नाटक तीन मुख्य बांस प्रजातियों यथाः *ग्वाडुआ एंगेस्टीफोलिया, डेन्ड्रोकैलेमस स्टॉक्साई, डैन्ड्रोकेलेमस ब्रांडीसाई* पर पुस्तिकायें अवमुक्त की गई। इस अवसर पर संस्थान के परिसर में बांस की विभिन्न प्रजातियों का रोपण किया गया यथा : *डेन्ड्रोकैलेमस जिगेंटस, डी. स्टॉक्साई, डी. ब्रैन्डीसाई, डी. एस्पर, बम्बूसा बाल्कुआ, थारसोटाईकिस ओलीवरी, गुआडुआ एंगेस्टीफोलिया, स्कीजोस्टेकम ब्रेकीक्लेडम।*
- उष्ण कटिबंधीय व अनुसंधान संस्थान जबलपुर में दिनांक 22 मई 2013 को जैवविविधता पर अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाया गया।
- विश्व पर्यावरण दिवस दिनांक 5 जून 2013 को मनाया गया।
- राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 28 फरवरी 2014 को मनाया गया और मासिक ई–मैगजीन *वन संज्ञान* का विमोचन किया गया।
- शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपरु के सहयोग से दिनांक 5 जून 2013 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर बच्चों के लिए "हमारा पर्यावरण" पर पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई। जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय परिसर में पौध रोपण किया गया।
- रेगिस्तानीकरण को रोकने हेतु विश्वदिवस दिनांक 17 जून 2013 को मनाया गया।
- प्रदर्शन ग्राम सलवास में दिनांक 30 जुलाई 2013 को वन महोत्सव का आयोजन किया गया जिसमें ग्रामीणों ने भाग लिया। सलवास में प्रदर्शन ग्राम स्थल पर बहुउद्देशीय वृक्ष प्रजातियों तथा औषधीय पादपों का रोपण किया गया।
- हिमालय वन अनुसंधान, शिमला में जैव विविधता पर अन्तर्राष्ट्रीय दिवस दिनांक 22 मई 2013 को मनाया गया और वन जैवविविधता पर व्याख्यान दिये गये। जल संरक्षण तथा जैवविविधता पर स्कूली बच्चों के लिए ड्राईंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- पंथघाटी, शंकुवृक्ष परिसर में अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस दिनांक 20 मई 2013 को मनाया गया। शिमला के विभिन्न स्कूलों के लगभग 30 बच्चों के विभिन्न कार्यक्रमों जैसे क्विज प्रतियोगिता, पेंटिंग प्रतियोगिता

और जल एवं जीवविज्ञानीय विविधता पर स्लोगन प्रतियोगिता आयोजित की गई।

- शंकुवृक्षीय परिसर में डब्ल्यू.डब्ल्यू.एफ. के सहयोग से हिमलायी दिवस दिनांक 9 सितम्बर 2013 को मनाया गया। इस अवसर पर कार्यशाला को आयोजन किया गया जिसमें 80 भागीदार शामिल हुये। महान हिमालय से सम्बन्धित समस्याओं के बारे में विचार किया गया और हिमालय को बचाने हेतु विचार व्यक्त किये गये। इस अवसर पर "हिमालयी पारिपद्धति के सतत् तथा समग्र वृद्धि को पुनः परिभाषित तथा पुनः आकलित" करने पर प्रस्तुतियां दी गई।
- वर्षा वन अनुसंधान, जोरहाट में अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस दिनांक 22 मई 2013 को मनाया गया जिसमें छेनियामगुरी, हाई स्कूल के विद्यार्थियों एवं अध्यापकों, सोताई (जोरहाट) तथा व.व. अ.सं. के वैज्ञानिकों, अधिकारियों तथा स्टॉफ के सदस्यों सहित 150 व्यक्तियों ने भाग लिया। इस अवसर पर "उत्तर–पूर्वी भारत में जीव–जन्तु एवं वानस्पतिक वैविध्य और उसका संरक्षण'' विषय पर प्रस्तुतियां दी गई।
- पंचवटी प्रकृति मंका, जोरहाट, महात्मा गांधी कॉलेज, जोरहाट (आसाम) के सहयोग से दिनांक 5 जून 2013 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया जिसमें बड़ी संख्या में स्कूल/कॉलेज के विद्यार्थियों, व.व.अ.सं. वैज्ञानिकों अधिकारियों और सहायक कर्मचारियों ने भाग लिया। विभिन्न क्रिया–कलापों का आयोजन किया गया जैसे क्विज, ड्राईंग स्लोगन तथा निबन्ध प्रतियोगिता आदि।
- वानिकी अनुसंधान तथा मानव संसाधन विकास केन्द्र, छिन्दवाड़ा में मुनागा, जिला छिंदवाड़ा के ग्रामीणों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस दिनांक 22 मई 2013 को मनाया गया।
- विश्व पर्यावरण दिवस दिनांक 5 जून 2013 को मनाया गया।

भा.वा.अ.शि.प. के संस्थानों में वन महोत्सव का आयोजन

- वन महोत्सव का आयोजन जुलाई 2013 के प्रथम सप्ताह में किया गया और सी.आर.एच.आर.डी., छिन्दवाडा के परिसर में बालवृक्षों का रोपण किया गया।
- केन्द्र द्वारा दिनांक 2 से 4 अक्टूबर 2013 तक वन्यजीव संरक्षण सप्ताह मनाया गया।

7.4. परामर्शी सेवायें

पर्यावरण प्रबन्धन के क्षेत्र में उच्च निष्पादकता प्राप्त करने हेतु भा.वा.अ.शि.प. मुख्यालय के विस्तार निदेशालय, पर्यावरण प्रबन्ध प्रभाग द्वारा विभिन्न भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों और आर तथा डी तथा जैव–भौगोलिक क्षेत्र के शिक्षण संस्थानों के साथ सामुहिक रूप से परामर्शी सेवायें साझा की जा रही हैं। शुरूआत का मुख्य उद्देश्य ज्ञान को संयोजित करने के लिए तालमेल बैठाना तथा वैज्ञानिक सेवाओं की निष्पादकता को बनाये रखने के लिए टीमवर्क तैयार करना है। इस प्रयास में प्रभाग द्वारा वर्ष के दौरान निम्नलिखित परामर्शी सेवाओं को पूर्ण करने में सहयोग दिया गया :

1. बुनाखा जलविद्युत जलाशय (180 एम.डब्ल्यू.) परियोजना पर बुनाखा गांव के पास वांग–छू नदी में छुक्खा जोंगरबाग भूटान पर अन्तिम व्यापक पर्यावरण समाघात आकलन, (ई.आई.ए.)/पर्यावरणीय प्रबन्धन योजना अध्ययन रिपोर्ट तैयार करके टेहरी जल विद्युत विकास कार्पोरेशन के जरिये रॉयल भूटान सरकार को दी गई। यह भारत सरकार तथा रॉयल भूटान सरकार की द्विपक्षीय परियोजना है, जिसका क्रियान्वयन टेहरी जल विद्युत विकास कार्पोरेशन द्वारा किया जा रहा है।
2. सुईल नदी (हि.प्र. के चम्बा जिलों में रावी नदी की सहयोगी नदी) पर सुरगानी सुन्डला 48 एम.डब्ल्यू. ई. आई.ए./पर्यावरण प्रबन्धन योजना रिपोर्ट हिमाचल प्रदेश पावर कार्पोरेशन लिमिटेड को प्रस्तुत की गई।
3. नकथान (520 एम.डब्ल्यू.) नदी बहाव क्षेत्र जल विद्युत परियोजना, तोश नाला और पार्वती नदी पर ई.आई.ए. पर्यावरण प्रबन्धन योजना रिपोर्ट को अन्तिम रूप दिया जा रहा है। यह परियोजना हि.प्र. के कुल्लू जिले के बरशैनी पंचायत में स्थित है।
4. संयुक्त ई.आई.ए. जल विद्युत परियोजना यमुना तथा टौंस नदी घाटी की अन्तरिम प्रगति रिपोर्ट का प्रारूप उत्तराखण्ड जल विद्युत निगम लिमिटेड को प्रस्तुत किया गया है और विभिन्न प्राचलों का मौसमीय डाटा लिया जा रहा है।
5. सतलुज नदी और इसकी सहयोगी नदियों पर प्रारूप अन्तरिम प्रगति रिपोर्ट संयुक्त ई.आई.ए., ऊर्जा विभाग, हिमाचल प्रदेश को दी गई है।
6. अंकुआ लोह–अयस्क खान के लिए व्यापक ई.आई.ए. एवं पर्यावरणीय प्रबन्धन रिपोर्ट। अंकुआ ग्राम, अंकुआ रिजर्व फॉरेस्ट, मनोहरपुर तालुका, पश्चिमी सिंहभूमि जिला, झाड़खण्ड राज्य की रिपोर्ट मैसर्स जे.एस.डब्ल्यू स्टील लिमिटेड को प्रस्तुत की गई।
7. माननीय उच्चतम न्यायलय (भारत) के कर्नाटक

सरकार को दिये गये दिशा निर्देशों के अनुसार 2013–14 के दौरान एकल खान तथा खनन प्रभावित बेल्लारी जिलों चित्रदुर्गा और तुमकुर का पुनरूद्धार तथा पुनर्स्थापन कार्य जारी रखा गया। श्रेणी ए तथा बी की 93 खानों के लिए योजना पूर्ण ली गई है जो वर्तमान वित्त वर्ष में "ए" तथा "बी" की 32 खानों के लिए सी.ई.सी. दिशा निर्देशों के अनुसार खान विभाग, कर्नाटक सरकार को प्रस्तुत की गई हैं।

व.अ.सं., देहरादून द्वारा विभिन्न हितधारकों को निम्नलिखित परामर्शी सेवायें मुहैया कराई गई :

- मैसर्स हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड, विशाखा रिफाइनरी, विशाखापट्टनम को "कुलिंग प्रकाष्ठ का गुणवत्ता आकलन तथा कार्यस्थलीय प्रशिक्षण" पर परामर्शी सेवायें दी गई।
- ता प्रोहम मंदिर, कम्बोडिया में संरक्षण के लिए अप्सरा प्राधिकरण, कम्बोडिया तथा ए.एस.आई. को सलाह दी गई।
- बोधगया में बोधिवृक्ष के अनुरक्षण तथा संरक्षण के लिए बोधगया मंदिर प्रबन्धन समिति को सलाह दी गई।
- सरकारी संगठनों तथा निजी उद्योगों से कागज के नमूने प्राप्त किये गये और उनका भौतिक परीक्षण किया गया तथा प्रकाशीय गुणों का परीक्षण किया गया, यथा: रोजगार समाचार, भारतीय सेवा, एन.सी.ई.आर.टी., मैसर्स आयुक्त राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल, मेसर्स जिला शिक्षा केन्द्र, बेतुल (एम.पी.), मैसर्स जिला शिक्षा केन्द्र शिवपुरी (म.प्र.), मैसर्स जिला शिक्षा केन्द्र सर्व शिक्षा अभियाना, खड़गांव (एम.पी.) आदि।

का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर द्वारा विभिन्न संगठनों (सरकारी / गैर सरकारी / पी.एस.यू. / प्राईवेट / व्यक्ति आदि) को परीक्षण एवं परामर्शी सेवायें दी गई जैसे काष्ठ की पहचान, नमी मात्रा का निर्धारण, घनत्व तथा शक्ति गुण आदि। डब्ल्यू.पी.ई.डब्ल्यू. प्रभाग द्वारा परीक्षण तथा परामर्शी सेवाओं के जरिये कुल रू. 5.65 लाख की आय अर्जित की गई।

हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा एच.पी.पी.सी.एल., शिमला से "रिड्राफ्टिंग ऑफ कैचमेन्ट एरिया ट्रीटमेन्ट प्लान – शौंगटोंग – करछम जलविद्युत परियोजना" का परामर्शी कार्य लिया गया है।

7.5. राजभाषा सम्बन्धित क्रियाकलाप

भा.वा.अ.शि.प. मुख्यालय द्वारा हिन्दी मैग्जीन "तरूचिंतन" का प्रकाशन किया गया और दिनांक 27 जून 2013 को सरकारी काम में हिन्दी को बढ़ावा देने हेतु राजभाषा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। दिनांक 27 जून 2013 को हिन्दी साफ्टवेयर "सारांश" पर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण का उद्देश्य भा.वा.अ.शि.प. के कार्मिकों को साफ्टवेयर में सिद्धहस्त करना था।

सितम्बर 2013 के दौरान भा.वा.अ.शि.प. और उसके संस्थानों द्वारा हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस दौरान निबन्ध लेखन, मसौदा लेखन, अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद, हिन्दी टंकण तथा स्वरचित काव्य पाठ की प्रतियोगितायें आयोजित की गई।

भा.वा.अ.शि.प., द्वारा दिनांक 25 फरवरी 2014 को राजभाषा हिन्दी पर प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें भा.वा.अ.शि.प. के 50 से अधिक कार्मिकों ने भाग लिया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा द्विभाषी राजभाषा मार्ग–दर्शिका तैयार की गई जिसमें प्रशासनिक शब्दावली, दैनिक सरकारी कार्य में प्रयुक्त नोटिंग, तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दों का उपयोग, समाहित है। इसे व.आ.वृ.प्र.सं. के सभी कर्मचारियों को वितरित किया गया।

7.6. पुरस्कार तथा सम्मान

- डॉ. दिनेश कुमार, व.अ.सं., देहरादून ने सी.एम.आई. आर.–राष्ट्रीय वानस्पतिक अनुसन्धान संस्थान पुरस्कार प्राप्त किया, जो उनके प्रलेख "भारत की कठोर पर्यावरणीय स्थितियों में *जैट्रोफा करकस* की कृषि–तकनीक" पर दिया गया। इस प्रलेख को *बायोमास एन्ड बायोनर्जी* 48:191–202 में प्रकाशित किया गया।
- डॉ. हुकम सिंह, व.अ.सं. को स्टार्ट अप, विज्ञान एवं अभियांत्रिकी अनुसन्धान बोर्ड अनुसन्धान योजना, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा डी.एस.टी. युवा वैज्ञानिक पुरस्कार दिया गया।
- डॉ. विनीत कुमार, व.अ.सं. को प्रतिष्ठित डॉ. एच.सी. श्रीवास्तव युवा वैज्ञानिक पुरस्कार दिया गया। जिसे दिनांक 20 से 22 जनवरी 2014 को देहरादून में आयोजित "कार्बोहाइड्रेटस के रसायनशास्त्र एवं जीवविज्ञान की चुनौतियों" पर अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस के दौरान भारतीय कार्बोहाइड्रेटस केमिस्ट एवं तकनीकी संघ ने प्रदान किया।
- डॉ. विनीत कुमार, शिप्रा नागर तथा डॉ. वाई.सी. त्रिपाठी, व.अ.सं., देहरादून को सर्वोत्तम पोस्टर प्रस्तुत करने पर पुरस्कार मिला। पोस्टर का शीर्षक था "डू एसोर्टेड एप्रोचेज एड इन डिटर्मिनेशन ऑफ यूरोनिक एसिड्स? *टाईनोस्पोरा साइनीसिस* पालीसेकेराईड इन साईन्स मॉडल एन्ड स्पाईन्स

पोस्टर कम्पीटीशन", इसे दिनांक 27 फरवरी 2014 को पेट्रोलियम विश्वविद्यालय एवं ऊर्जा अध्ययन, देहरादून में एन.आर.डी.सी. प्रायोजित इन्नोवेट इन्डिया प्रोग्राम के अंतर्गत द्वारा आयोजित किया गया था।

- कैज्यूरियाना कार्यदल द्वारा डॉ. ए. निकोडीमस, वैज्ञानिक–ई, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर को नाइट्रोजन फिक्स करने वाले वृक्षों का सुधार एवं आई.यू.एफ.आर.ओ. वर्किंग पार्टी 02.08.08 नाइट्रोजन फिक्स करने वाले वृक्ष का सुधार एवं संवृद्धि के संयोजक के रूप में नामित किया गया।
- डॉ. मधुमिता दासगुप्ता, व.आ.वृ.प्र.सं., को अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाष्ठ व्यापार संगठन फेलोशिप प्राप्त हुआ जिसके तहत "मॉलीक्यूलर साइटोजेनिटिक्स टेक्नीक्स" पर टेक्सास ए तथा एम. विश्वविद्यालय, कॉलेज स्टेशन टैक्सास, यू.एस.ए. में दो महीने का प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर दिया गया।
- सुश्री करपगा राजा सुन्दरी, वैज्ञानिक–बी, व.आ.वृ.प्र सं. को दिनांक 23 से 24 सितम्बर 2013 को व.आ.वृ.प्र. सं., कोयम्बटूर में वृक्ष जैव प्रौद्योगिकी के राष्ट्रीय सेमीनार में पोस्टर सत्र के दौरान प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- डॉ. विपिन प्रकाश, वैज्ञानिक–डी, व.व.अ.सं., जोरहाट को "यंग एचीवर अवार्ड–2013" प्राप्त हुआ, जिसे मानव और प्रकृति के उत्थान पर डॉ. वाई. एस. परमार, फलोद्यान एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौनी, सोलन, हिमाचल प्रदेश द्वारा प्रदान किया गया।
- डॉ. पी. के. दास को इन्डियन फॉरेस्टर जर्नल में प्रकाशित लेख के लिए 'ब्राडिंस ममोरियल प्राइज' 2011 प्राप्त हुआ। (सिंह, पी.के., दास पी.के. और कुली, एस.एम.एस. (2011)। इकोनोमिक एनालिसिस आफ एग्रोफॉरेस्ट्री मॉडल एडपटिड बाए ट्राइबल्स आफ उड़ीसाः इंडिया *इंडियन फॉरेस्टर प्राइज* **137** (5):535–534)।